Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shrimad Bhagavad Gita Chapter–2 Shalok–32 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय दो–श्लोक बत्तीस | PDF

अध्याय 2 – सांख्य योग

श्लोक 32

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् |
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् || 32 ||

सरल हिंदी में भावार्थ

हे अर्जुन!
जो युद्ध अचानक स्वयं उपस्थित हो जाए और जो स्वर्ग का द्वार खोलने वाला हो, ऐसा अवसर बड़े भाग्य से मिलता है। ऐसे धर्मयुद्ध का अवसर पाकर क्षत्रिय स्वयं को धन्य समझते हैं।

विस्तृत व्याख्या

यह श्लोक क्षत्रिय जीवन में धर्मयुद्ध के महत्व, सौभाग्य और उसके पीछे छिपे आध्यात्मिक संदेश को स्पष्ट करता है। श्रीकृष्ण अर्जुन को यह समझा रहे हैं कि यह युद्ध केवल संघर्ष नहीं, बल्कि एक **दुर्लभ अवसर** है, जो उन्हें धर्म की स्थापना और आत्मोन्नति दोनों की ओर ले जाता है।

अर्जुन जैसे वीर को इससे विमुख नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह कोई सामान्य युद्ध नहीं, बल्कि एक ऐसा कर्तव्य है जो स्वयं सामने आ खड़ा हुआ है।

1. स्वर्ग का द्वार खोलने वाला अवसर

इस प्रकार का धर्मयुद्ध क्षत्रिय के लिए पुण्य और उन्नति का मार्ग है।

यह युद्ध अर्जुन के द्वार पर **यदृच्छया**—अर्थात *स्वयं घटित होकर* आया है।

ऐसा अवसर दुर्लभ होता है और स्वयं को सिद्ध करने का महान क्षण होता है।

2. क्षत्रिय का सौभाग्य

क्षत्रिय के लिए धर्म की रक्षा करना सर्वोपरि कर्तव्य है।

जब धर्म की स्थापना के लिए युद्ध का अवसर बिना किसी प्रयास के प्राप्त हो, तो यह अत्यंत सौभाग्य की बात मानी जाती है।

ऐसे युद्ध से क्षत्रिय को सम्मान, पुण्य और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है।

3. अर्जुन की दुविधा का समाधान

कृष्ण अर्जुन को बता रहे हैं कि—

यह युद्ध किसी स्वार्थ के लिए नहीं है।

यह परिस्थितियों द्वारा प्रस्तुत हुआ *धर्म-युद्ध* है।

इससे पीछे हटना केवल कर्तव्य-त्याग ही नहीं, बल्कि एक दुर्लभ अवसर को खो देना भी होगा।

4. योद्धा के लिए गौरव का क्षण

धर्मयुद्ध योद्धा के जीवन में *श्रेष्ठतम उपलब्धि* माना गया है।

ऐसे अवसर पर डटे रहना ही क्षत्रिय धर्म की प्रतिष्ठा है।

इससे बढ़कर गौरव योद्धा के लिए कुछ नहीं।

तर्क का उद्देश्य

भगवान कृष्ण अर्जुन को यह दृष्टिकोण दे रहे हैं कि कभी-कभी जीवन में कुछ अवसर **कर्तव्य निभाने और आत्मोन्नति** का मार्ग खोलते हैं। ऐसे क्षणों को समझकर साहसपूर्वक आगे बढ़ना ही धर्म का पालन है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक सिखाता है कि—

जीवन में आने वाले कुछ संघर्ष दिखने में कठिन होते हैं, परंतु उनका उद्देश्य आत्मविकास होता है।

जब परिस्थितियाँ स्वयं मार्ग प्रशस्त करें, तो उसे साहस और विवेक के साथ स्वीकार करना चाहिए।

ऐसा अवसर आत्मबल, कर्तव्य और सत्य की स्थापना के लिए होता है।

पदों का भावार्थ

यदृच्छया उपपन्नम् – स्वयं आया हुआ, आकस्मिक रूप से प्राप्त

स्वर्ग-द्वारम् अपावृतम् – स्वर्ग का द्वार खुला हुआ

सुखिनः क्षत्रियाः – भाग्यशाली क्षत्रिय

युद्धम् ईदृशम् लभन्ते – ऐसा धर्मयुद्ध प्राप्त करते हैं

श्लोक का संदेश

जीवन में कुछ अवसर बहुत विशेष होते हैं—उन्हें पहचानकर स्वीकार करना चाहिए।

कर्तव्य के अनुसार आया हुआ संघर्ष सौभाग्य बन जाता है।

धर्म, साहस और जिम्मेदारी से मिला अवसर कभी त्यागना नहीं चाहिए।

Related Article

Chapter–2 Shalok–30

Chapter–2 Shalok–31

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS